एक कॉरपोरेट एग्ज़ीक्यूटिव की तारीफ होती है उसका सीवी और किसी व्यवसायी को उसकी पूंजी से आंका जाता है। लेकिन एक संत के लिए तो उनका आचरण, उनकी क्षमताएं और उनकी अलौकिक काबिलियत ही उनका सच्चा परिचय होते हैं। इतिहास में हुए ज्यादातर संतों ने उपचार के जरिए हमें अपनी शक्तियों से रूबरू कराया है। आइए अब आगे बढ़ते हैं,

एक असाधारण वैद्य

ये दुनिया गुरुदेव को एक चमत्कारिक उपचारक के रूप में जानती थी, जो अपनी इच्छा से इलाज कर सकते थे। उन्होंने एक मिनट से भी कम समय में मेरी एक लाइलाज बीमारी का इलाज कर दिया था। मेरी तरह ऐसे असंख्य लोग हैं,जिन्हें उन्होंने अपने शारीरिक अवतार में लगभग **18** वर्षों तक उपचार का लाभ दिया। उनके जीवन काल के पश्चात भी यह सिलसिला बदस्तूर जारी है।

वो सिर्फ शारीरिक बीमारियों का इलाज नहीं करते थे बल्कि उससे कहीं ज्यादा वो काला जादू, बुरे साए की समस्या, पित्र पीड़ा, आर्थिक समस्याएं, करियर से जुड़े मसले, और आध्यात्म से जुड़ीं दिक्कतें दूर करने में मदद करते थे। यह फेहरिस्त यकीनन बहुत लंबी है।

यदि हिसाब लगाने बैठें तो शायद हम यह सोचकर हैरान रह जाएंगे कि वो इतने सारे लोगों की परेशानियां कैसे सुलझा लेते थे, जबकि वो उन लोगों से केवल चंद सेकेंड के लिए ही रूबरू होते थे। उनकी तकलीफों के बारे में जानने का तो वक्त ही नहीं होता था, लेकिन फिर भी उनका इलाज हो जाता था। आखिर कैसे?

बिट्टू जी इस दुविधा को दूर करने की कोशिश करते हैं,

सवाल : अगर वो एक मिनट में 20 लोगों को आशीर्वाद देते थे, तो ऐसे में वो सभी को कैसे याद रख पाते थे?

बिट्टू जी : मैं उनके शब्दों को दोहराऊंगा। वो कहा करते थे, "जो भी स्थान पर आता है और श्रद्धा से मत्था टेकता है, और जहां शायद सभी मुझे याद नहीं रहते, लेकिन जब मैं पाठ करने बैठता हूं तो पूरी फिल्म मेरे सामने चलती थी।"

ज़रा उनकी अंतिम लाइन पर गौर फ़रमाएं ... 'पूरी फिल्म मेरे सामने चलती थी।' बिट्टू जी ने जो बताया वो अनोखा नहीं था। गुरुदेव ने यह बात हममें से ज्यादातर लोगों से कही थी। एक बार अपनी सेवा खत्म करके उन्होंने मुझे साफ तौर पर बताया था कि मैं सबसे पहले उस आखिरी इंसान को याद करता हूं, जो मेरे पास आया था और फिर मैं सबसे पहले आने वाले इंसान के बारे में सोचता हूं। और फिर इनके बीच जो भी आए वो सब मेरे ज़ेहन में आ जाते हैं और मैं उन सभी की मुश्किलों पर काम कर पाता हूं। ये तभी मुमकिन होता है, जब मैं पहले और आखिरी शख्स पर ध्यान लगाता हूं।

उनके पास आने वालों की सूची लंबी थी, लेकिन वो सबकी मदद करने को तत्पर रहते थे। उनका मिशन ये था कि वे लोगों को आध्यात्म की तरफ मोड़ें। उनकी मदद का दायरा इंसानी जिंदगी से कहीं आगे था। वो जिंदगी के हर स्वरूप के लिए जिम्मेदारी महसूस करते थे। उनकी मिसालों की बदौलत ही आज मैंने कॉकरोच और मच्छरों समेत हर तरह के कीड़े-मकोड़ों से हमदर्दी करना भी सीख लिया है।

मेरी तरह नितिन गाडेकर को भी ऐसे ही तत्काल इलाज का अनुभव हुआ था। उनके गुर्दे की कुछ पथरियां पल में गायब हो गई थीं।

नितिन गाडेकर : मुझे किडनी स्टोन था और वो किडनी स्टोन आगे बढ़ रहा था। जिसे किडनी की समस्या है, वो आपको बता सकते हैं कि आपको पता नहीं चलता कि आप आ रहे हैं या जा रहे हैं और मैं बड़ा परेशान था। मेरी एक आंटी डॉक्टर हैं। उन्होंने एक दूसरे डॉक्टर को बुलाया, जिन्होंने मुझे कुछ इंजेक्शन लगाए और तब मुझे दर्द में थोड़ी राहत मिली थी, लेकिन मुझे मौत का डर सताने लगा था। ऐसा भी नहीं है कि मैं मौत के बारे में सोचता हूं लेकिन मैं काफी डर गया था और मैंने शाम को फोन उठाया और गुरुजी से बात की। मुझे लगता है कि दर्द के उस डर ने ही मुझे गुरुजी को फोन करने के लिए बाध्य किया। मैंने कहा, "गुरुजी मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।" उन्होंने पूछा, "क्या समस्या है?" मैंने कहा, "मुझे किडनी स्टोन है। मैंने एक्स-रे

कराया है और मेरी किडनी में तीन पथरियां हैं।" उन्होंने कहा, "तो?" मैंने कहा, "मैं इसे लेकर बहुत परेशान हूं।" उन्होंने कहा, "मेरा बेटा होकर डरता है?" मैंने कहा, "नहीं गुरुजी, मुझे बहुत दर्द हो रहा था। मैं अब वो दर्द और नहीं चाहता।" तब गुरुजी ने कहा, "ठीक है अब मत डरो। तुम अब बिल्कुल ठीक हो चुके हो।" इतना कहकर उन्होंने फोन रख दिया। जिस पल उन्होंने फोन रखा, वो तीनों पथरियां पूरी तरह से गायब हो चुकी थीं। उस दिन से यानी 1985 से आज तक मुझे अपनी किडनी में कोई समस्या नहीं हुई है और जितने भी डॉक्टरों ने मेरी जांच की और जिन्होंने वो पथरियां देखी थीं, उनके पास इस बात का कोई जवाब नहीं है कि आखिर वो पथरियां कैसे गायब हो गईं।

मैंने अब तक जितने भी इलाजों के बारे में सुना है, यह उनमें सबसे फौरी इलाज था और वो भी मरीज की नब्ज़ टटोले बिना! किडनी की **2-3** पथरियां बस चंद सेकेंड में गायब हो गईं। क्या किसी लेज़र से इस तरह का इलाज मुमकिन है?

ऐसा इलाज तो सिर्फ सिद्ध आलौकिक शक्तियां ही कर सकती हैं।

गुरुदेव की उपचार करने की क्षमताएं लगभग अविश्वसनीय थीं!

गिरी लालवानी जी को तो ऐसा अनुभव हुआ कि वो अपने 'हाथ की सफाई' वाले जुमले से सीधे 'चरणों में प्रणाम' तक पहुंच गए। ऐसे शरारती आदमी के लिए तो इसे एक लंबी छलांग ही कहा जाएगा।

गिरी लालवानी : मैं, श्याम धुमटकर और मेरे एक और गुरु भाई श्री कृष्णा, हम तीनों गुरुजी से मिलने गए। मैंने उन्हें देखा और मैंने उनसे नमस्ते तक नहीं की थी। मैंने उनके पैर भी नहीं छुए, कुछ भी नहीं किया। और उन्होंने हमारा स्वागत किया। वहां एक बड़े हैंडसम गुड लुकिंग आदमी खड़े हुए थे, जो अब मेरे ससुर जी हैं (हंसते हुए)। तो फिर गुरुजी ने कहा, "आओ पुत्र।" मैं उनके पास गया। उन्होंने मुझे अपने हाथ पर कुछ दिखाया। मैं समझ नहीं पाया कि वो क्या दिखा रहे थे। उन्होंने कहा, "ये ओम है, ये त्रिशूल है, ये गणपति हैं और यह शिवलिंग है।" उन्होंने कहा, "पुत्र तुम यह नहीं देख सके, है ना?" मैंने कहा, "नहीं, मैं नहीं देख पाया।" फिर उन्होंने मुझे दोबारा दिखाए। फिर मैं देख पाया। मैंने गणपति जी को देखा और...

सवाल : क्या आपने सिर्फ उतना ही देखा या कुछ और भी चीजें थीं, जो उस वक्त आप उनके हाथ में नहीं देख पाए थे?

गिरी लालवानी : नहीं, बस इतना ही था। शायद बहुत-सी चीजें होंगी, जो मैंने नहीं देखीं। और शायद मैं इसलिए भी नहीं देख सका, क्योंकि इसमें मेरी दिलचस्पी नहीं थी। सच कहूं तो बिल्कुल भी नहीं थी।

सवाल : जब उन्होंने आपको यह दिखाया था, तो क्या इससे आप प्रभावित हुए थे?

गिरी लालवानी : नहीं। तो हम सब बाहर आ गए और सड़क पार करके एक कोने में खड़े हुए थे। सनी ने श्याम से पूछा, "तुम्हें कैसा लगा?" श्याम बड़े प्रभावित थे। उन्होंने कहा, "शानदार, बहुत ही शानदार।" तब उन्होंने कृष्णा से मराठी में पूछा, "कसा काय ? (यह कैसा था?)" कृष्णा भी बड़े प्रभावित थे। उन्होंने कहा, "चांगला (बढ़िया)।" तब उन्होंने मुझसे पूछा, "कैसा लगा?" मैंने कहा, "छोड़ो भी, यह सब हाथ की सफाई है और बेकार की बातें हैं।" मैं घर गया और तब तक मैं सबकुछ भूल चुका था। तो पहली बार यही हुआ था। लेकिन फिर मेरे दोस्त, जो अब मेरे गुरु भाई हैं, वो मार्च में गुड़गांव जा रहे थे। उन्होंने कहा कि बड़ा गुरुवार को वहां एक समारोह होता है। तो मैंने कहा, "इस बार मैं भी चलूंगा।" तो हम सभी दिल्ली आए फिर हम वहां से गुड़गांव पहुंचे। इसके बाद हम सभी बड़ा गुरुवार को गुरुजी को देखने गए। उस वक्त रात के 9 या 9:30 बजे थे। वहां बहुत लंबी कतार थी।

सवाल : यह 1983 की बात थी?

गिरी लालवानी : 1983। मार्च। तो हम सभी ने सुबह 3 बजे उनके दर्शन किए। वो गुरुवार का दिन था। गुरुदेव बड़े खुशमिजाज नजर आ रहे थे और उन्होंने लुंगी और शर्ट पहन रखी थी। जिस पल उन्होंने मुझे देखा, उन्होंने कहा, "तो कैसी लगी तुम्हें हाथ की सफाई?" मैंने कहा, "हे भगवान, ये सनी, मेरे दोस्त, ने इन्हें सबकुछ बता दिया बहुत गलत बात है।" ये ख्याल मेरे ज़हन में आया और इससे पहले कि मैं कुछ कहता या करता, उन्होंने मुझसे कहा, "कल आकर मिलो।" अगले दिन वो मुझसे उनके बेडरूम में मिले और उन्होंने कहा, "तुम्हारे दोस्त ने मुझसे हाथ की सफाई के बारे में कुछ नहीं कहा है।" मैंने कहा, "ओह माय गॉड, फिर इन्हें यह सब कैसे पता चला, जबकि मैंने यह ख्याल तो किसी और से बताया ही नहीं था?" उन्होंने कहा, "मैं

सबकुछ जानता हूं। तुम्हें एक बीमारी है।" तब उन्होंने दवाइयों के नाम भी बताए जो मैं उस वक्त ले रहा था और उनके नाम मुझे अब याद नहीं है। उन्होंने मुझसे कहा, "सारी कैप्सूल्स और गोलियां फेंक दो, उन्हें बाथरूम में बहा दो। मैं तुम्हें ऐसे ही 6 महीनों में ठीक कर दूंगा।" फिर उन्होंने मुझे लौंग-इलाइची दीं, बस और कुछ नहीं।

सवाल : इस बार आपने इस पर यकीन किया?

गिरी लालवानी : हां, इस बार मैंने इस पर विश्वास किया था। सच कहूं तो मेरे पास कोई और चारा भी नहीं था। इसलिए मैंने इस पर यकीन किया। जब तक मैं घर पहुंचा तब तक मैं 90% आराम महसूस कर चुका था।

सवाल : आपको यकीन है कि यह आपके मन का वहम नहीं था?

गिरी लालवानी : नहीं, बिल्कुल नहीं। शारीरिक रूप से मैं खुद में बड़ी एनर्जी महसूस कर रहा था और मैं 90% तक ठीक था। उसके बाद जब 6 महीने पूरे हुए तो उन्होंने मुझे मुंबई में कॉल किया और मुझसे कहा, "पुत्र, 6 महीने पूरे हो गए हैं। अब जाओ और अपने टेस्ट करा लो।" मैंने कहा, "ठीक है।" मैं डॉक्टर के पास गया। गुरुजी ने मुझे कहा था कि अपनी पुरानी रिपोर्ट डॉक्टर को ना दिखाऊं। मैंने कहा, "ठीक है।" तब मैं गया और मैंने अपना एक्स-रे कराया। गुरुजी ने मुझसे कहा था कि मैं अपनी पुरानी रिपोर्ट बाद में दिखाऊं। डॉक्टर ने कहा, "तुम ठीक हो, तुम्हारे साथ कोई समस्या नहीं है।" तब मैंने उन्हें अपनी पुरानी रिपोर्ट दिखाईं। उन्होंने कहा, "ये रिपोर्ट तुम्हारी नहीं हैं। ये किसी और की होंगी, शायद गलती से तुम्हें आ गईं।"

जब हाथ की सफाई, दिल की सच्चाई में बदली, तो बड़े कारगर नतीजे सामने आए। गुरुदेव के शब्दों में, वो इलाज उन्होंने नहीं किया था बल्कि मरीज के विश्वास ने ही उसका वो मर्ज दूर किया था।

शायद यह गुरुदेव की महानता हो, लेकिन मैंने ऐसे कई उदाहरण देखे थे, जहां उनके पास आने वाले श्रद्धालुओं को चमत्कारिक परिणाम मिले थे।

इलाज के लिए आने वाले बहुत-से लोग उनके अनुयायी बन गए, कुछ भक्त हो गए और कुछ शिष्य बन गए।

वीरेंदर जी की कहानी भी कुछ ऐसी ही है।

वीरेंदर जी : मैंने जो उनमें सबसे प्रभावशाली शक्ति देखी थी, वो उनके इलाज के तरीकों में थी। मेरी किस्मत मुझे उनके पास ले गई थी। उन दिनों मैं पलवल में पदस्थ था और मेरा निवास फरीदाबाद के सेक्टर 7 में था। मेरी पत्नी कुछ महीनों से काफी बीमार थी। उन्हें कुछ गाइनेकोलॉजिकल समस्या थी, शायद उनके गर्भाशय या किसी और चीज़ से जुड़ी समस्या। अच्छी से अच्छी एंटीबायोटिक्स काम नहीं कर रही थीं। मैं उन्हें मूलचंद हॉस्पिटल ले गया था। मैं 1983-84 की बात कर रहा हूं। मैं उन्हें वहां डॉ शीला मेहरा के पास ले गया था। उन्होंने कहा, "मुझे इस महिला का तुरंत ऑपरेशन करना पड़ेगा, नहीं तो उन्हें और गंभीर समस्याएं हो जाएंगी। मेरी पत्नी सीधे खड़े नहीं हो पा रही थी। उनका शरीर झुका हुआ था। तब एक सज्जन मेरे घर के निकट रहने आए थे, जहां एक एसडीओ रहते थे। उन दिनों श्री अशोक अग्रवाल हुडा में एसडीओ के रूप में काम करते थे। हमारे घरों की एक ही दीवार थी। तो उस सज्जन ने अग्रवाल जी से पूछा, "ये महिला जो बीमार है, वो कौन है?" उन्होंने जवाब दिया, "वो नए जज हैं और वो उनकी पत्नी हैं, जो बीमार हैं।" उस सज्जन ने कहा, "उनसे कहिए कि गुड़गांव जाएं। वहां सेक्टर 7 में गुरुजी रहते हैं। वो उन्हें ठीक कर देंगे।" मैं देख सकता था कि मेरी पत्नी वाकई बहुत तकलीफ में थी। इस तरह मैं 1984 में महाशिवरात्रि के दिन उनसे मिलने गया था। लेकिन जब मैंने वहां लोगों की लंबी कतार देखी, तो मैं कार से नीचे उतरने की हिम्मत भी नहीं जुटा पाया। जहां तक नजरें जातीं, वहां तक लंबी कतार थी। बड़े खूबसूरत लोग थे - बूढ़े, जवान और दिल्ली से आए हुए लोग। सभी गुरुदेव की एक झलक पाने के लिए इंतजार कर रहे थे। मैं वापस फरीदाबाद लौट आया। मेरे साथ इंस्पेक्टर भजनलाल बिश्नोई भी थे। उन्होंने मुझे सलाम किया और कहा, "सर, क्या मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूं?" मैंने कहा, "क्या आप इस संत के साथ मेरी मुलाकात करवा सकते हैं। मैं उन्हें आमने-सामने मिलना चाहता हूं।" और फिर 16 अप्रैल 1984 को मैं उनसे पहली बार मिलने गया। वो बड़ी खूबसूरत मुलाकात थी। उन्होंने कहा, "तू आ गया पुत, मुझे तेरा इंतजार था।" वो सुंदर शब्द अब भी मेरे कानों में गूंजते हैं। मैंने उन्हें बताया कि मेरी पत्नी बीमार हैं। वो मुझसे कहते रहते कि बड़ा गुरुवार को आओ, गुरु पूजा के दिन आओ, और मैं उनसे मिलता रहता था। फिर लगभग 5 महीने बाद 27 सितंबर 1984 को मैं अपने कोर्ट का काम खत्म करके शाम को उनके पास गया और उनसे कहा, "या तो आप

उसका इलाज कर दें या उसे खत्म कर दें। लेकिन उसे इस तरह बीच में लटकाकर ना रखें।" तब उन्होंने अपने शिष्य शर्मा जी को बुलवाया। उन्होंने कहा, "शर्मा जी, इधर आओ।" शर्मा जी बड़ी कद काठी के व्यक्ति थे। बड़े स्वस्थ आदमी थे। गुरुजी ने उनसे कहा, "इस औरत का दर्द खींच लो।" तो शर्मा जी ने मेरी पत्नी के माथे के बीच में और दोनों तरफ कुछ थपकियां दीं। और कुछ ही सेकंड में मेरी पत्नी के सिर पर नींबू के आकार की तीन चीजें उभर आईं। उन्होंने बताया कि मेरी पत्नी को कोई आत्मा परेशान कर रही थी और अब उन्हें कोई परेशान नहीं करेगा। उन्होंने मुझे कुछ बातों का ध्यान रखने के लिए भी कहा। उन्होंने मेरी पत्नी से सीधे खड़े होने को कहा और वो तुरंत सीधे हो गईं। उन्होंने उससे कहा, "क्या तुम्हें अब दर्द महसूस हो रहा है?" तब मेरी पत्नी ने कहा, "नहीं।" उन्होंने उसे चलने को कहा, तो उसने चलकर भी दिखाया। वो वापस आई तो उन्होंने फिर पूछा, "क्या अब तुम्हें दर्द हो रहा है?" उसने कहा, "नहीं।" फिर उन्होंने उससे दौड़ने को कहा। मेरी पत्नी कुछ कदम तक दौड़ीं और वापस आईं। गुरुजी ने फिर उनसे पूछा, "क्या तुम्हें कोई दर्द हो रहा है?" और यकीन मानिए वो आखिरी बार था, जब उसे किसी तरह का कोई दर्द हुआ था। इसके बाद उसे कोई दर्द नहीं हुआ।

किसी शायर ने भी क्या खूब कहा है...

हर दर्द का इलाज नहीं मिलता दवाख़ाने से
कुछ दर्द चले जाते हैं सिर्फ मुस्कुराने से

पुंचू सेठी हमेशा से स्थान पर बड़ा महत्व रखती हैं। गुरुदेव के प्रति उनका अटूट विश्वास है। गुरुदेव ने शायद ही उन्हें एक नन्हीं लड़की की तरह समझा, जो वो उन दिनों में थीं। मैं तो लगभग उनसे ईर्ष्या कर बैठा था। आगे सुनते हैं एक कहानी, उनकी जुबानी।

पुंचू सेठी : मुझे याद है मुझे नियमित तौर पर माइग्रेन रहता था। एक बार हम गुरुजी के सामने थे और मेरे मामा जी ने उनसे पूछा, "गुरुजी क्या आप इसका माइग्रेन ठीक कर सकते हो?" गुरुजी ने मुझे देखा और कहा, "जिसे भी यह दर्द हो, उसे सिर पर ऐसे करना चाहिए"। उन्होंने मुझे दिखाया कि माइग्रेन कैसे ठीक करते हैं। उन्होंने कहा कि यदि मैं इस तरह 100 लोगों के माइग्रेन का इलाज कर दूं तो इतनी सेवा करने के बाद धीरे-धीरे मेरा माइग्रेन भी खत्म हो जाएगा। और मैंने वैसा ही किया। मुझे याद है हम लोग एक स्कूल ट्रिप पर जयपुर गए थे और वहां एक लड़की थी, जिसके सिर में दर्द हो रहा था और, जैसे गुरुजी ने बताया था, मैंने उसके

माथे पर अपने अंगूठे और पहली उंगली से दबाया और देखते ही देखते जादू हो गया! उसका सिर दर्द गायब हो गया। इसके बाद दो-तीन लड़कियां और आईं। क्लास में यह चर्चित हो गया और जिसे भी माइग्रेन होता, वो मेरे पास आता था और मैं उसका इलाज करती थी। यह ऐसा था जैसे मेरी उंगलियों में कोई जादू आ गया हो।

गुरुदेव अक्सर अपने पास इलाज या मदद के लिए आने वाले लोगों से सिर्फ विश्वास ही नहीं बल्कि सेवा-भाव की भी उम्मीद करते थे। पुंचू के उदाहरण और अब आगे गिरी की बहन के उदाहरण से उनकी यह आध्यात्मिक व्यवस्था और साफ हो जाती है।

इसका मतलब यह हुआ कि वो दूसरों को उपचार के काम में लगाकर, हर इलाज को मुकम्मल करते थे।

गिरी लालवानी : यह मेरी बहन के बारे में है। उनमें से एक दिल्ली में रहती है। अब उसकी शादी हो चुकी है। मैं 1985 की बात कर रहा हूं। उस समय वो यंग थी और उसने कॉलेज जॉइन किया था। वो बहुत खूबसूरत दिखती थी। लेकिन उसके हाथ और पैरों में कुछ त्वचा रोग हो गया था। उसमें पस भरा रहता था और चमड़ी भी निकलती रहती थी और उसमें सूजन भी रहती थी। उसके हाथ और पैरों से बड़ी गंदी बदबू आती थी। मुझे याद है कोई भी उसके कमरे में नहीं जा पाता था क्योंकि वहां बहुत गंदी बदबू आती थी। वो खाना भी नहीं खा पाती थी, यहां तक कि सलवार भी नहीं पहन पाती थी। वो अपने हाथ से कुछ भी नहीं कर पाती थी। और चल भी नहीं पाती थी। वो नहा भी नहीं पाती थी, किसी को उसे नहलाना पड़ता था। कुल मिलाकर पूरी तरह से लाचार हो गई थी। मुझे उस पर दया आती थी और मैंने गुरुदेव जी को कॉल करके बताया कि उसके साथ क्या हुआ है। उन्होंने मुझे उसे गुड़गांव लाने को कहा और मुझसे बोले, "मैं उसे ठीक कर दूंगा।" तो मैं उसे गुड़गांव ले गया और गुरुदेव ने उससे कहा, "बेटा एक काम करो तुम यहां 11 दिनों तक लंगर में सेवा करो। तुम फुल्कों में घी लगाओ और तुम ठीक हो जाओगी। बस इतना ही। लंगर दिन में दो बार होता है, तो तुम दिन में दो बार फुल्कों में घी लगाना और तुम अच्छी हो जाओगी।" जब 11 दिन पूरे हुए तो वो पूरी तरह ठीक हो गई। आज उस बात को 22-23 साल हो गए और उसको दोबारा कभी वो बीमारी नहीं हुई। उससे पहले तो हर 6 महीने में उसको वो बीमारी हो जाती थी और हमें हर बार पूरे मुंबई में और पूरे देश में स्किन स्पेशलिस्ट के पास जाना पड़ता था। लेकिन कोई भी उसका इलाज नहीं कर पाया था। बेशक, वो उसका इलाज करते, लेकिन वह बहुत कम समय के लिए होता था। वो

बीमारी फिर से लौट आती थी। लेकिन उस दिन के बाद से उसे कभी वो बीमारी नहीं हुई यह इतना बड़ा चमत्कार था।

नादौन के संतोष जी के बेटे रणधीर, गुरुदेव के आलौकिक चमत्कारों की ऐसी कई कहानियां बयां करते हैं, जहां गुरुदेव ने एक असाधारण उपचारक की भूमिका निभाई थी।

रणधीर : मैं एक अनुभव बताना चाहूंगा जो मेरी छोटी बहन रुचि के साथ हुआ था। जब वो पैदा हुई थी तो उसके मुंह के बीच में एक दांत उग आया था।

सवाल : कहां?

रणधीर : मुंह के ठीक बीच में ऊपर की तरफ।

सवाल : अच्छा मुंह के बीच में जैसे दांत के ऊपर कोई और दांत?

रणधीर : हां, लेकिन मुंह के बिल्कुल अंदर। यहां तक कि डॉक्टर भी डरे हुए थे और उन्होंने हमसे कहा कि मुंह को बाजू से काटना पड़ेगा और उसे हटाने के लिए ऑपरेशन करना पड़ेगा और कुछ भी हो सकता है। स्थान पर गुरुजी की एक मूर्ति थी और हम हर दिन वहां धूप-ज्योत जलाते थे। वहां पर विभूति पड़ी हुई थी। मेरी बड़ी बहन वहां गई। हम लोग बहुत छोटे थे और हमें कुछ नहीं पता था। वो वहां गई और उसने कहा, "मेरी बहन को ठीक कर दीजिए।" उसने वहां से थोड़ी विभूति उठाई और मेरी बहन के दांत पर लगा दी। और कुछ ही सेकंड में वो दांत गायब हो गया!

(वाह!)

रणधीर : मेरी बहन पापा के पास दौड़ती हुई गई और उन्हें यह सब बताया। पापा को भी ये सुनकर यकीन नहीं हुआ। उन्होंने हमारे पापा को अंदर लाया और जब उन्होंने रुचि के दांत को छूने की कोशिश की तो दांत वहां नहीं था!

(बहुत सुंदर!)

वो दांत तो जा चुका था, लेकिन विश्वास अपनी जड़ें जमा चुका था!

यदि आप चाहें तो इसे करिश्मा कह सकते हैं। इनमें से कुछ करिश्में उनके शिष्यों ने गुरुदेव की शक्तियों का इस्तेमाल करके किए, जो अपने आप में अद्भुत थे।

रवि त्रेहन जी ऐसे ही एक चमत्कार के बारे में बताते हैं,

रवि त्रेहन : कई साल पहले अमेरिका से एक दंपति आए थे। उस वक्त वो लेडी करीब 65-66 साल की रही होंगी। उन्हें ब्रेन ट्यूमर था, जो खतरनाक स्तर पर पहुंच चुका था। अमेरिका में उनका इलाज चल रहा था। खुशकिस्मती से उनके दोनों बेटे डॉक्टर थे, जो कैंसर के विशेषज्ञ भी थे। उनकी पत्नियां भी डॉक्टर थीं और कैंसर की ही विशेषज्ञ थीं। उनका इलाज 2 साल तक चला। आखिर में अमेरिका के डॉक्टरों ने यह तय किया कि वो उस लेडी को बता दें कि मेडिकल रिपोर्ट के मुताबिक उनकी जिंदगी तीन-चार महीने से ज्यादा की नहीं है। तो डॉक्टरों ने उनके बेटों से कहा कि यदि उनकी कोई आखिरी इच्छा हो तो वे उसे पूरी कर दें। उनके बेटों ने अपने पैरेंट्स को यह बात बताई। तो उन्होंने तय किया कि यदि मरना ही है, तो विदेशी धरती पर क्यों मरें? उनका अंबाला में एक बड़ा-सा घर था। तो वो अपने देश में आकर वहां अपनी अंतिम सांस लेना चाहती थीं।

सुबह करीब 6- 6:30 बजे मैं सुबह उठा और मैंने गेट खोला तो मैंने देखा एक दंपति वहां आए हैं और किसी महात्मा के बारे में पूछ रहे थे, जो हर तरह की बीमारियों का इलाज करते हैं। मैंने पूछा कि उन्हें क्या समस्या है। उन्होंने बताया है कि वो बड़ी उम्मीद और विश्वास के साथ इतनी दूर से यहां आए हैं। उन्होंने मुझे समस्या बताई। मैंने उन्हें स्थान पर बैठने को कहा। मैंने कहा, "मैं अभी आता हूं।" मैंने उन्हें वहां भेज दिया। मैं आपको उस वक्त अपने मन की स्थिति बताता हूं। मैंने गुरुजी की तस्वीर की तरफ देखा। मैंने कहा, "प्रभु आप आज किस तरह की परीक्षा ले रहे हैं? वो कहीं से यहां आए हैं और जहां मेडिकल साइंस इतनी उन्नत है और डॉक्टरों ने भी बता दिया है कि उनकी जिंदगी तीन-चार महीने से ज्यादा की नहीं है और फिर भी वो जिंदगी मांगने यहां आई हैं। मैंने कहा, "आपने ही उन्हें यहां बुलाया है। मैंने उन्हें बुलाने के लिए कोई प्रयास नहीं किए हैं।" और मैं एक चीज मानता हूं कि यदि वो यहां आए हैं तो उनकी जिंदगी बची है, इसीलिए उन्हें ये मार्ग मिला। मैंने उन्हें सुपारियां बनाकर दे दी, लौंग, इलायची

महाशिवरात्रि जल वगैरह दे दिया। मैंने कहा, "यह लीजिए और क्योंकि आप इतनी दूर से आए हैं, तो आप 40 दिन बाद आओ।" वो लेडी रोते हुए कहने लगीं, "हमें अमेरिका से आए हुए 40-45 दिन हो चुके हैं और आप मुझे 40 दिन बाद आने को कह रहे हैं, इसका मतलब है कि 3 महीने का समय जो मुझे डॉक्टरों ने दिया था, वो खत्म हो जाएगा। तब तक तो मैं मर जाऊंगी, मैं कैसे आऊंगी?" मैंने पूरे विश्वास के साथ उस लेडी से कहा, "देखिए यदि किसी ने आपको ये रास्ता दिखाया है तो मैं आपको यकीन से कह सकता हूं कि आप 40 दिन बाद यहां आएंगी। मुझे नहीं पता आप कितनी बेहतर होकर आएंगी, लेकिन आप आएंगी जरूर।"

वो महिला 40 दिन बाद जरूर आईं। पहले उनकी हालत ऐसी थी कि उन्हें हर दिन तेज सिर दर्द होता था, इतना तेज कि उन्हें ऐसा लगता था कि अपना सिर दीवार में दे मारें। लेकिन 40 दिन बाद जब वो आईं, तो उनके दर्द की तीव्रता कम हो चुकी थी और रोज के बजाय उन्हें दो-तीन दिनों में एक बार सिर दर्द होता था। मैंने उन्हें फिर से सुपारियां बनाकर दीं, लौंग-इलायची और जल दिया और कहा कि वो 40 दिन बाद फिर आएं। इस बार वो महिला रोई नहीं। उन्होंने कहा, "यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं वापस आऊंगी।" वो 41 दिन बाद फिर लौटीं और उन्होंने बताया कि अब वो दर्द उन्हें हफ्ते या 10 दिन में एक बार होता है और वो पहले से काफी बेहतर महसूस कर रही हैं। इस तरह वह छह-सात महीनों तक मेरे पास आते रहे। 7 महीनों बाद जब 3 महीने का वो नाजुक दौर बीत चुका था, तब इस लेडी में गजब का आत्मविश्वास आ चुका था। मैं भी अपने मालिक अपने गुरुजी का आभारी हूं क्योंकि उन्हें इस तरह ठीक करना तो मेरे बस में नहीं था। यह सब गुरु की, उस ईश्वर की कृपा है। आठवें महीने में उन्होंने मुझसे कहा, "मुझे अपने बच्चों से मिलने की बहुत इच्छा हो रही है। यदि आप इजाजत दें, तो क्या मैं अमेरिका जाकर अपने बच्चों से मिलकर वापस आ सकती हूं।" मैंने कहा, "जी जरूर जाइए, लेकिन जाने से पहले मुझसे मिलकर जाइए, ताकि आप पर्याप्त मात्रा में लौंग, इलायची, सुपारी एवं जल वगैरह साथ ले जाएं क्योंकि मुझे नहीं पता कि आप कब वापस लौटेंगी।" वो आईं और ये उपचार सामग्री अपने साथ अमेरिका ले गईं । एक महीने बाद उस लेडी ने अमेरिका से मुझे फोन किया। वो बहुत उत्साहित लग रही थीं। उन्होंने मुझसे कहा, "गुरुजी यह तो एक चमत्कार है।" मैंने पूछा, "क्या हुआ।" उन्होंने जाने से पहले मुझे बताया था कि वो उस हॉस्पिटल में चेकअप कराना चाहती हैं, जहां 2 साल से उनका इलाज चल रहा था। मैंने कहा, "हां जरूर।" उन्होंने वहां अपना चेकअप कराया था और एक महीने बाद जब उन्हें रिपोर्ट मिली, तो उनमें कैंसर का नामोनिशान नहीं था।

इस मौके पर तो फ़हमी बदायूनी का यह शेर बड़ा मौज़ू होगा,

पूछ लेते वो बस मिज़ाज मेरा
पूछ लेते वो बस मिज़ाज मेरा
कितना आसान था इलाज मेरा

ऐसे करिश्माई इलाज के जो अनुभव रवि जी को हुए, वो कई मौकों पर गुरुदेव के बहुत से शिष्यों को भी हुए हैं।

हालांकि ये कहना लाज़मी होगा कि सभी मरीजों को इतने चमत्कारी नतीजे नहीं मिलते हैं।

70 से 80% पीड़ितों को थोड़ा-थोड़ा या एक बार में ही पूरा आराम मिल जाता है।

किसी का मर्ज़ जल्दी ठीक हो जाता है और कोई धीरे-धीरे स्वस्थ हो पाता है।

असल में, गुरुदेव की शक्तियां ही मरीजों के इलाज की रफ्तार तय करती है।

ज्यादातर इलाज उन्हीं की शक्ति के सहारे पूरा होता है। यह सब उन्हीं के आशीर्वाद की कृपा है, जो हम पर बनी हुई है।

श्री साहनी पुराने दिनों से एक अदद श्रद्धालु रहे हैं। गुरुदेव के साथ उनका बड़ा क़रीबी नाता था। वो ऐसी ही एक गहरी बात बताते हैं,

श्री साहनी : गुरुजी ने मुझे एक नई जिंदगी दी है। आप पूछेंगे मैं गुरु जी के पास कैसे आया। मुझे एसिडिटी की बड़ी गंभीर समस्या थी। मैं ज्यादा देर तक गाड़ी भी नहीं चलाता था क्योंकि मैं बहुत डरा हुआ था। तो गुरुजी और उनके आशीर्वाद से ही मैं ठीक हो पाया था।

सवाल : कितने मिनट में?

श्री साहनी : (हंसते हुए) मैं एक महीने में ठीक हुआ था। क्या आप यकीन कर सकते हैं?

(जी हां, मैं यकीन करता हूं।)

श्री साहनी : मैं आपसे एक घटना का जिक्र करना चाहता हूं। मेरे एक भतीजे की मासी थी, जिनके बेटे को हर हफ्ते बोन मैरो ट्रांसप्लांट की जरूरत पड़ती थी। तो उसकी मां और मामा जी मेरे घर आए और मुझसे गुरुजी के पास ले चलने के लिए कहने लगे। मैं उन्हें गुरुजी से मिलाने ले गया। मैं गुरुजी के कमरे में दाखिल हो गया क्योंकि उस वक्त मुझे कोई नहीं रोकता था। तो मैं सीधे उनके कमरे में गया और मैंने उन्हें उस लड़के की फोटो दिखाई और उनसे कहा, "गुरुजी इसके दो छोटे बच्चे हैं, कृपया इसे जीवनदान दे दीजिए।" वो मान गए और उन्होंने उस तस्वीर की तरफ एक मिनट तक देखा और कहा, "मैं इसे ठीक कर दूंगा लेकिन इसने गौ मांस खाया है।" वो लड़का लंदन में रहकर पढ़ाई करता था। गुरुजी ने मुझसे कहा कि उसके मामा जी को अंदर बुलाओ। गुरुजी ने उनसे कहा, "आप उनसे कहो मैं लौंग, इलायची और जल दे रहा हूं जो उस लड़के को लेनी होगी।" उसके मामाजी मान गए और उन्होंने कहा कि वो उस लड़के से ऐसा करने को कहेंगे। गुरुजी ने कहा, "हां, उससे कहिए", और फिर उन्होंने उस लड़के की फोटो लेकर अपने पलंग के नीचे रख ली। जब भी गुरुजी किसी की फोटो अपने पलंग के नीचे रखते हैं, तो उस व्यक्ति की जिंदगी बढ़ जाती है। करीब एक हफ्ते बाद गुरुजी ने मुझसे पूछा, "साहनी, वो आपके रिश्तेदार का क्या हुआ?" तो मैंने जवाब दिया, "गुरुजी वो कह रहा है कि वो जल और इलायची नहीं लेगा।" यह सुनकर गुरुजी गुस्से में आ गए और उन्होंने कहा, "तो इसकी फोटो ले जा यहां से।"

तो पूरण जी और मैंने पलंग के नीचे उसकी फोटो ढूंढी क्योंकि गुरुजी ने वहां **8-10** हजार फोटो रखी हुई थी, उन लोगों की, जिन्हें मदद की जरूरत थी। गुरुजी के पलंग के नीचे रखी हुई तस्वीरों वाले लोग जीवनदान पाते थे। शिवरात्रि के आसपास हम इन तस्वीरों को हरिद्वार ले जाकर विसर्जित कर देते थे। पूरण जी और मैंने उस फोटो को बहुत ढूंढा, लेकिन वो हमें नहीं मिली। हम जानते थे कि जब तक यह फोटो गुरुजी के पलंग के नीचे रहेगी, तब तक उस इंसान को दूसरा जीवन मिलता रहेगा। और इस समय वो एक स्वस्थ जीवन जी रहा है।

सवाल : और वो भी जल पिए बिना?

श्री साहनी : हां, उसने जल पीने से मना कर दिया था, उसके मामा जी ने मुझे यही बताया था। अभी मुझे नहीं पता क्योंकि मेरी उनसे बात नहीं होती। गुरुजी ने तो अचानक मुझसे पूछा था कि तुम्हारे रिश्तेदार का क्या हुआ? जब मैंने उनसे बताया था, तो गुरुजी गुस्सा हो गए थे और उन्होंने कहा था कि उसकी फोटो यहां से ले जा। पूरण जी और मैंने उस फोटो को बहुत ढूंढा, लेकिन वो हमें मिली नहीं। क्योंकि वो फोटो बेड के नीचे ही थी, तो उसकी जिंदगी बची रही।

इस घटना से एक बड़ी दिलचस्प बात सामने आई।

गुरुदेव के जिस रूप ने इलाज का भरोसा दिलाया था, वो उनका गुरु-स्वरूप था।

जिस रूप का गुस्सा नजर आया, वो उनका शारीरिक रूप था।

जहां उनके शारीरिक रूप ने इस बात पर प्रतिक्रिया दी थी कि उनके प्रयासों का सम्मान नहीं किया जा रहा है, वहीं उनके गुरु-स्वरूप ने इन बातों से ऊपर उठकर उस मरीज का इलाज करके उसे राहत दी थी।

वैसे, समझने के लिहाज़ से ये बड़ा गहरा और अक्सर बहुत मुश्किल विषय माना जाता है।

देवराज बचपन से स्थान पर आते जाते रहे हैं। जब वो करीब **11** साल के थे, तब से ही स्थान के प्रति उनकी आस्था थी। आज वो लोगों का उपचार करके और उन्हें परामर्श देकर उनकी सेवा करते हैं और उन्हें आध्यात्म की राह पर आगे बढ़ने में मदद करते हैं।

अगली कहानी इलाज के साथ-साथ एक मां की ममता और त्याग की दास्तान है। और कहानी के अंत में गुरु का न्याय भी शामिल है।

देवराज : तो, यह अनुभव तीन दशक से ज्यादा पुराना है। ये उस वक्त की बात है, जब मेरी मां और मैंने स्थान पर जाना शुरू ही किया था। मुझे बड़े गंभीर किस्म का अस्थमा था। हम कई शहरों में गए और मैं अक्सर बीमार पड़ जाता था। उसी समय मेरी मां को ल्यूकेमिया होने का पता चला, जो ब्लड कैंसर का एक प्रकार है। और उस समय हमने स्थान के बारे में सुना था, और जब आप इलाज खोजते हैं तो आप सारे विकल्प आजमाने को तैयार रहते हैं। मेरी मां ने

कई साल बाद मुझे बताया था कि जब वो गुरुजी से पहली बार मिली थीं, तब उन्होंने मेरी मां से कहा था कि वो हम में से सिर्फ किसी एक को ठीक कर सकते हैं। तो कौन-सी मां भला ये कहेगी कि मेरे बेटे के बजाय मुझे ठीक कर दो? मेरी मां ने भी कहा, "मेरे बेटे को ठीक कर दो।" जल्द ही अगले कुछ वर्षों में स्थान के आशीर्वाद से मैं ठीक हो गया। लेकिन असली खूबसूरती वो नहीं है। सच्ची खूबसूरती तो यह है कि कहीं ना कहीं मेरी मां का त्याग उनके लिए कई गुना कारगर साबित हुआ। आपको शायद इस पर यकीन ना हो लेकिन अगले 17-18 वर्षों तक, जब तक उनका निधन नहीं हुआ, तब तक हर 3 से 6 महीने में हम उनका ब्लड टेस्ट करते रहे थे। हर 6 महीने में हम एक हीमेटोलॉजिस्ट के पास जाते थे, जो मुंबई की एक सम्मानित डॉक्टर थीं। और हर 6 महीनों में वो मुझे बुरी से बुरी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार करती थीं। लेकिन सच तो यह है कि वो बुरा कभी हुआ ही नहीं। इन 17-18 सालों में अपने निधन तक, मेरी मां ने ल्यूकेमिया की एक भी दवाई नहीं ली। उनका ल्यूकेमिया बिल्कुल भी नहीं बढ़ा। यह दुर्लभ से दुर्लभ मामलों में से एक था और मुझे भी याद है उनके हीमेटोलॉजिस्ट डॉ एमडी अगरवाल ने उनसे कहा था, "आप जानती हैं, आप कैंसर से नहीं मरेंगी।" और मुझे लगता है कि यह उनके त्याग और गुरु की कृपा के कारण ही संभव हो पाया था।

ऋषभ मानिकतला गोपीगंज में सेवा करते हैं, जो बनारस और इलाहाबाद के बीच स्थित है। ऋषभ एक ऐसा वाकया सुनाते हैं, जिसमें गुरुदेव के एक शिष्य ने आंखों की समस्या से पीड़ित एक इंसान का इलाज किया था। और फिर कैसे वो इंसान अपना इलाज करने वाले के साथ पेश आया था और किस तरह इलाज करने वाले ने उस इंसान को प्रतिक्रिया दी थी।

आइए इस दिलचस्प गुफ़्तगू का लुत्फ उठाया जाए!

ऋषभ मानिकतला : तो, यह अनुभव उन शुरुआती दिनों का है, जब गोपीगंज के हमारे स्थान में सेवा शुरू हुई थी। एक रविवार जब सेवा चल रही थी, तब गुरुजी भी स्वयं वहां मौजूद थे। इस दौरान एक जवान आदमी, जिसकी आंखों की रोशनी बहुत कम थी, किसी तरह अंदर आने की कोशिश कर रहा था। जब हमने उससे पूछा कि हम उसकी क्या सेवा कर सकते हैं, तो उसने बताया कि वो बड़ी मुश्किल से देख पाता है। तब गुरुजी ने उससे कहा, "ठीक है हम तुम्हारी मदद करने की कोशिश करेंगे। हम आज कोशिश करके आपको थोड़ी राहत देंगे।" स्थान की शक्ति की मदद से उसका इलाज किया गया। उसे कुछ आराम मिलने लगा। जब गुरुजी ने

उससे पूछा, "तुम कैसा महसूस कर रहे हो?" उसने कहा, "मैं थोड़ा बेहतर हूं लेकिन अब भी मैं देख नहीं सकता, क्योंकि मेरी आंखों की ज्यादातर रोशनी जा चुकी है।" और तब गुरुजी ने उससे कहा, "ठीक है। लेकिन आज के लिए हम इतना ही कर सकेंगे।" वो आदमी मुस्कुराया और उसने कहा, "यह ठीक है। कम से कम मुझे यहां आकर आप लोगों से मिलने का मौका तो मिलेगा।" इससे गुरुजी के चेहरे पर भी मुस्कान बिखर गई और उन्होंने कहा, “ठीक है, आओ आज ही इनकी कुछ और मदद करते हैं।" इलाज के अंत तक ये आदमी कमरे से अपनी आंखों की पूरी रोशनी लेकर बाहर निकला था। वो यकीन नहीं कर पा रहा था कि उसके साथ क्या हुआ है, क्योंकि वो लंबे समय से धुंधली दृष्टि के साथ जिंदगी जी रहा था। तो यह एक ऐसा चमत्कार था, जिसका मैं भी गवाह था और मुझे लगा कि मुझे इसके बारे में बताना चाहिए।

सवाल : आप इसका श्रेय किसे देंगे?

ऋषभ मानिकतला : मैं इसका श्रेय स्थान की शक्ति और स्थान की ऊर्जा को दूंगा और गुरु के आशीर्वाद के साथ-साथ उस व्यक्ति के आचरण को भी श्रेय दूंगा, जो मदद की गुहार लेकर आया था। उसे आंशिक मदद से ही संतोष था और उसे अपने लिए किसी चमत्कार की आस नहीं थी। मुझे लगता है कि इन्हीं बातों और गुरु की कृपा के चलते उस इंसान के लिए यह संभव हुआ था।

एक शेर यूं ही याद आ रहा है

उनके मुंह से आज मेरे हक़ में दुआ निकली है
उनके मुंह से आज मेरे हक़ में दुआ निकली है
जब मर्ज़ फैल गया है तब दवा निकली है

कनिका भल्ला और उनके पति ध्रुव बंगाल में सेवा करते हैं। वे अपने पास मदद की आस लिए आने वाले लोगों का इलाज करते हैं। इलाज की सेवा के अलावा वे रोज लोगों को खाना खिलाते हैं और पीड़ितों का दर्द दूर करने के लिए एक निशुल्क क्लीनिक भी चलाते हैं। उनकी इस कहानी की शुरुआत भी बड़ी दिलचस्प थी।

कनिका उन पलों को याद करती हैं, जब वो इस स्थान से जुड़ी थीं और जिसके बाद उन्होंने अपने आप से नाता जोड़ा था,

सवाल : आपको उस वक्त एक बड़ा चमत्कारिक अनुभव हुआ था, जब कुछ ही घंटों में आपके ब्रेन का क्लॉट गायब हो गया था। क्या आप हमें वो अनुभव बता सकती हैं?

कनिका भल्ला : मुझे बड़ा कमाल का अनुभव हुआ था। मेरी पहली प्रेग्नेंसी के बाद करीब 7 दिन बाद जब मैं घर आई तो इसके तीन-चार दिन बाद मुझे तेज सिर दर्द होने लगा। और मुझे नहीं पता था, क्या हो रहा था। तो मैंने अपने पति ध्रुव से ठंडे पानी की बोतल मांगी, जो मैंने 10-15 सेकेंड्स में पूरी पी ली। पानी पीने के बाद मैंने ध्रुव से कहा, "मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। यही आखिरी बात थी, जो मुझे याद थी। अगले दिन आईसीयू के बेड पर मेरी नींद खुली और मेरे आस-पास कोई नहीं था। मुझे कुछ भी नहीं पता था कि क्या हुआ है। असल में उस रात मुझे मिर्गी का दौरा पड़ा था। ध्रुव और कुछ लोगों ने मुझे अस्पताल लाकर भर्ती कराया था। वहां के डॉक्टर काफी हैरान थे कि मुझे अब भी वो अटैक आ रहा था जो एक घंटे तक चला। उन्होंने मुझे दवाइयां दीं और बताया कि मेरे दिमाग में खून का थक्का जमा हुआ है, जो शायद उस वक्त बन गया होगा, जब मेरा सिजेरियन हुआ था। यह क्लॉट ऊपर की तरफ बढ़कर मेरे ऑकीपिटल लोब में बैठ गया था, जिसका संबंध आंखों की देखने की क्षमता से होता है और इसीलिए मेरे सामने पूरा अंधेरा छा गया था और मैं कुछ भी नहीं देख पा रही थी। डॉक्टरों ने सभी से कहा कि उन्होंने मुझे दवाइयां दी हैं और उन्हें यकीन था कि मैं जरूर जागूंगी, लेकिन उन्होंने यह भी अंदेशा जताया था कि जब मैं उठूंगी तो इसका कोई साइड इफेक्ट नजर आएगा, क्योंकि मेरे ब्रेन में यह क्लॉट था। मुझे पक्षाघात हो सकता था या फिर मेरी आंखों की रोशनी पर असर पड़ सकता था या मेरी एक आंख की रोशनी जा सकती थी या फिर कुछ देर के लिए मुझे धुंधला दिखाई दे सकता था। उस समय सभी लोग चिंतित थे और फिर ध्रुव ने गुरुजी को कॉल किया और उन्होंने बताया कि क्या हुआ है। गुरुजी ने ध्रुव से मेरी तस्वीर मांगी। जब उन्होंने मेरी तस्वीर देखी तो उन्होंने कहा, "देखो इस समय सुबह के 5 बज चुके हैं। कोई भी पूरी रात नहीं सोया। कनिका आईसीयू में है, तो यहां कोई भी उसके साथ नहीं रुक सकता, तो तुम्हारे लिए बेहतर यही होगा कि तुम घर जाकर आराम करो। अगली सुबह आना और सबकुछ ठीक हो जाएगा।" ध्रुव शुरुआत में तो सहमत नहीं था, क्योंकि वो सोच रहा था कि वो मुझे इस हालत में छोड़कर कैसे जाएगा। गुरुजी ने फिर आग्रह करके कहा, "तुम्हें सिर्फ घर जाकर आराम करने की जरूरत है। अगली सुबह फिर वापस आ जाना।" ध्रुव ने फिर वैसा ही किया और अगली

सुबह वापस आए। जो डॉक्टर उनसे मिले थे बड़े आश्चर्यचकित थे, क्योंकि उन्होंने बताया कि मरीज को होश आ चुका है और उन्हें कोई भी साइड इफेक्ट नहीं हैं, ना पैरालिसिस, ना धुंधला दिखने की समस्या और वो क्लॉट भी पूरी तरह गायब हो चुका था। इतना कि न्यूरोलॉजिस्ट मुझे तीन-चार दिन तक लगातार देखने आते रहे ताकि वो यह सुनिश्चित कर सकें कि मुझे कोई साइड इफेक्ट्स तो नहीं हो रहे हैं। पर मैं पूरी तरह ठीक थी। वो मुझे कुछ और दिन हॉस्पिटल में रखना चाहते थे, लेकिन मुझे जल्दी छुट्टी दे दी क्योंकि उन्होंने कहा, "तुम्हें हॉस्पिटल में और रखने से कोई मतलब नहीं है, क्योंकि तुम पूरी तरह ठीक हो।" उन्होंने यह भी कहा, कि मुझे ख्याल रखने की जरूरत है क्योंकि मुझे लगभग मिर्गी होने का पता चला था। वो मेरा पहला अटैक था और गुरुजी की कृपा से मेरा आखिरी अटैक भी। इसके बाद मुझे कभी ऐसा दौरा नहीं पड़ा। इस बात को 10 साल हो चुके हैं। असल में 11 साल हो चुके हैं और गुरुजी की कृपा से ही यह संभव हुआ है। असल में मुझे 10 दिन बाद तक इस बारे में कुछ नहीं पता था। जब सबने मुझे बताया कि मैं किस मुश्किल से गुजरी थी, तब मैंने तुरंत गुरुजी को कॉल किया और उनसे कहा कि मैं कड़ा पहनना चाहती हूं, क्योंकि मैं पूरी तरह से मंत्रमुग्ध थी। मुझे यह एहसास हुआ कि हमें उनकी छत्रछाया में ही रहने की जरूरत है।

दुनिया के इतिहास में चंद लोग ही ऐसे हैं, जिन्होंने अपनी आलौकिक शक्तियां किसी और को सौंपी हों। गुरुदेव भी उन्हीं में से एक हैं, जिन्होंने बड़ी कुशलता से ऐसा किया था।

अब आगे पेश है ऐसे लोगों द्वारा किए गए उपचार की कहानी, जो आध्यात्मिक सेवा के मामले में गुरुदेव की तीसरी पीढ़ी के शिष्य हैं।

ये कहानी बताती है कि कैसे गुरुदेव ने स्वप्न अवस्था में पूजा सेठ को ऐसा इलाज दिया जो कई दिनों बाद आने वाले मरीज का उपचार बना।

पूजा सेठ : एक रात मुझे बड़े गुरुजी के दर्शन हुए थे और उन्होंने मुझे एक नारियल दिखाया था, जिसमें एक फूल था। चर्चा के दौरान उन्होंने मुझसे यह फूल किसी ऐसी महिला को देने के लिए कहा, जिसका कोई बच्चा ना हो। यानी किसी भी निसंतान दंपति को यह नारियल दिया जा सकता था। यह सपना कुछ देर में खत्म हो गया। इसके बाद ही गुरु पूर्णिमा थी और हमेशा की तरह मैंने गुरुजी से अपना नारियल अभिमंत्रित करवाया और उनसे उस सपने के बारे में बताया। गुरुजी ने कहा, "हां बेटा, जब जरूरत होगी तो हम ऐसा करेंगे। कुछ दिनों बाद जब मैंने मंदिर

में नारियल रखा, तो मैंने देखा उसमें से एक फूल निकल रहा है, जिसके साथ एक रुमाल बंधा हुआ था। मैंने उसे निकाला और अगले गुरुवार उसे ले जाकर गुरुजी को दिखाया। और मैंने कहा कि यह फूल नारियल के अंदर से निकला है और गुरुदेव ने मुझसे कहा था कि मैं इसे किसी ऐसी औरत को दूं, जिसको बच्चा नहीं है। तो संयोग से एक महिला थी, जो कई सालों से स्थान पर आ रही थी और वो निसंतान थी। तो गुरुजी ने हमें उसे यह नारियल देने को कहा। कुछ महीनों बाद ही हमें पता चला कि वो गर्भवती है और उसका पहला बच्चा होने वाला है। यह सिर्फ गुरुजी की और गुरुदेव की कृपा से ही हो पाया कि वो गर्भवती हुई। उस गुरुवार के बाद गुरु पूर्णिमा पर दो-तीन सालों तक मुझे नारियल में फूल मिलते रहे। हालांकि हमने इसे दूसरे जरूरतमंद लोगों को भी दिए, लेकिन इस घटना के बाद उस महिला को करीब 4-5 बच्चे हुए।

सभी मरीजों तक पहुंच पाना या उनसे मिल पाना मुश्किल था। ऐसे में दूर से ही इलाज करने का एक नया तरीक़ा ईजाद किया गया। गुरुदेव ऐसा ही किया करते थे, क्योंकि उनके पास हर व्यक्ति से मिलने के लिए शायद ही आधे मिनट से ज्यादा समय होता था। हम भी उन्हीं की राह पर चल पड़े और हमने देखा कि ये नुस्खा तो बड़ा कारगर रहा।

हालांकि इसमें थोड़े बदलाव किए गए। वो ये कि कहीं दूर बैठे मरीज का इलाज करते समय करीब आधा दर्जन सेवादार हमेशा एक ग्रुप लीडर के संपर्क में रहते हैं। और इसके नतीजे भी असरदार रहे। इस कोशिश से दूर-दराज के लोगों को राहत देने के अलावा हमें ज्यादा से ज्यादा लोगों को सेवा देने का मौका मिला। दीपक नागपाल ऐसे ही एक कोऑर्डिनेटर हैं। वो इस बात को मुकम्मल तौर पर कुछ यूं बताते हैं।

सवाल : तो दीपक जी, रिमोट हीलिंग यानी दूर से इलाज करने की विधि कैसे काम करती है?

दीपक नागपाल : रिमोट हीलिंग के अलग-अलग तरीके हैं। या तो आप टेलीफोन कॉल पर इसे कर सकते हैं, जहां मरीज दूसरी ओर होता है या फिर आप उसकी तस्वीर अपने सामने रखकर उसका इलाज कर सकते हैं। एक और तरीका यह है कि यदि आप उस इंसान से मिले हैं तो आप अपने ज़ेहन में उसकी तस्वीर याद करके उसका उपचार कर सकते हैं।

सवाल : तो उपचार के दौरान आप क्या इस्तेमाल करते हैं?

दीपक नागपाल : उपचार के दौरान हम उस व्यक्ति के बारे में सोचते हैं, जो दूसरी ओर है और हम मंत्रों का जाप करते हैं। मंत्रों का जाप करते हुए हम उपचार भी करते रहते हैं।

सवाल : आप मंत्रों के जरिए उस व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं?

दीपक नागपाल : जी हां।

सवाल : आप इस बात की पुष्टि कैसे करेंगे कि रिमोट हीलिंग कारगर रहती है?

दीपक नागपाल : तो जब हम रिमोट हीलिंग में मंत्रों के जरिए इलाज करते हैं तो हमें यह एहसास होता है कि इसका असर हो रहा है और कुछ समय बाद हम मरीज से पूछते हैं, चाहे वो टेलीफोन कॉल पर हो या फिर हमने उसकी तस्वीर लेकर उसका इलाज किया हो या फिर बाद में जब वो व्यक्ति फोन करता है और कहता है कि उसे बेहतर महसूस हो रहा है। तो हम उससे पूछते हैं कितने प्रतिशत? तब वो बताता है, 30%, 40%। तब हमें समझ में आ जाता है कि हम सही दिशा में जा रहे हैं और फिर हम बाकी का 60-70% उपचार भी जारी रखते हैं।

आइए रिमोट हीलिंग की चर्चा आगे बढ़ाते हैं। अब हम यहां विपन सेठ का एक और दिलचस्प उदाहरण बताते हैं। विपन मुंबई के स्थान पर एक सेवादार हैं। उन्होंने एक बड़ी खास बात बताई कि किस तरह उन्होंने चंद मिनटों में टेलीफोन पर एक व्यक्ति को ठीक कर दिया था।

विपन सेठ : बड़े वीरवार को जब हम गद्दी पर सेवा कर रहे थे तो एक पैरेंट आए - एक माता और पिता। उन्होंने स्थान से निवेदन किया कि उनकी बच्ची अस्पताल में भर्ती है। उसे बुरी तरह चोट लगी थी या उसकी रीढ़ की हड्डी में कुछ हुआ था, जिसकी वजह से वो कुछ दिनों से हॉस्पिटल में भर्ती है। डॉक्टरों का कहना था कि उसे ठीक होने में लंबा वक्त लगेगा। उन्होंने मुझसे रिक्वेस्ट की और मैंने गुरुजी और स्थान का नाम बताया और स्थान से मदद ली। हमने फोन पर बात की और 3 से 4 मिनट तक उपचार किया। मुझे अच्छे से याद नहीं है। उसे 90% तक आराम महसूस हो गया। और मेरा यकीन कीजिए दो-तीन दिन बाद उसे हॉस्पिटल से भी छुट्टी दे दी गई। अब वो ठीक है।

पूजा सेठ दशकों से पूरी निष्ठा से सेवा कर रही हैं, और इस यात्रा के दौरान उनका आध्यात्मिक दायरा भी बड़ा मजबूत हो गया है। उन्हें आलौकिक यात्रा के भी अनुभव हैं और इससे साबित होता है कि गुरुदेव का आध्यात्मिक प्रशिक्षण उनके कई पीढ़ियों के शिष्यों को काबिल बना चुका है।

सवाल : पूजा जी, आपने पहले मुझे बताया था कि आपको ऐसे अनुभव हुए हैं, जहां आपने किसी की मदद करने के लिए खुद को अपने शरीर से बाहर यात्रा करते हुए महसूस किया और अगले दिन उस व्यक्ति ने आपसे बताया था कि उसने आपको देखा था। तो क्या आप हमें वो अनुभव बता सकती हैं?

पूजा सेठ : मेरे कुछ अनुभव रहे हैं, जहां मैंने सूक्ष्म यात्रा (शरीर से बाहर की अलौकिक यात्रा) करके लोगों का उपचार किया है। उन्हीं में एक महिला भी शामिल थीं, जो बुरी तरह घायल थीं और बहुत दर्द में थीं। उन्होंने मुझे कॉल करके इस बारे में बताया। मैं अपनी स्वप्न अवस्था में उनके पास गई, क्योंकि इस यात्रा का एक मकसद था। मैंने उनका उपचार किया और उनका दर्द दूर करने में उनकी मदद की। अगली सुबह उन्होंने मुझे कॉल करके कहा, "मुझसे मिलने आने के लिए आपका धन्यवाद। आपने मेरा पूरा दर्द दूर कर दिया है और मुझे राहत पहुंचाई है, और अब मैं पूरी तरह ठीक हूं।"

इसके बाद एक और वाकया हुआ, जो सुनने में इस घटना से ज्यादा अस्वाभाविक लगता है।

पूजा सेठ : भरत को अपने सीटी स्कैन के लिए जाना था और वो इसे लेकर बहुत डरा हुआ था। इसलिए वो इसे लगातार टाल रहा था। मुझे नहीं पता था कि वो इस स्कैन के लिए जा रहा था, इसलिए मैंने अपना स्कैन कर लिया। तो यह एक और सूक्ष्म यात्रा का अनुभव है, जिसमें मैं उसके साथ मौजूद थी और उस समय उन्होंने मुझे वहां देखा था।

सवाल : लेकिन अपने शारीरिक स्वरूप में आप कहां थी?

पूजा सेठ : मैं अपने बिस्तर पर लेटी हुई थी। मैं रात में बहुत ध्यान कर रही थी। तो यह उसी समय की बात है।

हमने पूजा जी के दावे की हक़ीक़त जानने के लिए भरत से बात की, जिनका एमआरआई स्कैन हुआ था। उन्हें पूरा यकीन था कि उन्होंने पूजा को देखा, उनके साथ वक्त बिताया, और पूजा ने उनकी मदद की थी।

यह भी ग़ज़ब था, मगर सच तो यह है कि गुरुदेव के शिष्य जो भी करते हैं, वो ग़ज़ब ही होता है।

भरत : कुछ साल पहले मैं एक एमआरआई कराने गया था। मैं बहुत डरा हुआ था और पहली बार तो मैं वैसे ही भाग आया था। मेरी पत्नी ने मुझसे कहा, "गुरुजी के बारे में सोचो और दोबारा जाओ।" तो मैं गुरुजी का विचार करते हुए दोबारा वहां गया। मैं लेटा हुआ था और मैंने पूजा जी को देखा, जो मेरा हाथ पकड़कर मुझसे बात कर रही थीं। पूरे एमआरआई के दौरान मैं उनका हाथ थामे हुए था और जब एमआरआई पूरी हुई तो मैं बाहर आया और मैंने उनके बारे में पूछा। मेरी पत्नी ने कहा, "कौन पूजा जी? यहां कैसे होंगी?" मैंने कहा, "नहीं वो मेरा हाथ पकड़े हुए थीं और मुझसे बात कर रही थीं।" उसने कहा, "यहां कोई पूजा जी नहीं है।" मैं बड़ा आश्चर्यचकित था। मैंने इसकी कल्पना नहीं की थी। मैंने उनका हाथ देखा था और मैं उनसे बात कर रहा था। मेरी उनसे चर्चा हो रही थी।

सवाल : तो क्या पूजा जी आपके साथ थीं? वहां तो कोई पूजा जी नहीं थीं?

भरत : असल में टेक्नीशियन और मेरी पत्नी के अनुसार, वो वहां नहीं थीं। लेकिन मैं फिर यह कहूंगा कि वो वहां थीं और मैंने उनका हाथ पकड़ा था और उनसे बात की थी। वो भी मुझसे बात कर रही थीं और वो पूरे एमआरआई के दौरान मुझे सहज बना रही थी।

डॉ वचानी पिछले तीन दशकों से नियमित तौर पर स्थान पर आ रहे हैं। इन सालों के दरमियान उन्होंने मंत्र विद्या का अभ्यास किया और स्थान पर आने वाले मरीजों को संभालने में मदद करते रहे।

उनकी पत्नी भावना मुंबई के स्थान का किचन संभालती हैं और खाने की लज़्ज़त बढ़ाती हैं। बहरहाल, मेरा तो ये मानना है कि हमारे स्थान खानपान के लिए नहीं बल्कि आध्यात्मिकता और विकास के लिए हैं।

स्थान पर डॉ वचानी के उपचार के अनुभव में कुछ तकनीकी बारीकियां भी शामिल हैं। आइए ज़रा गौर से समझते हैं।

सवाल : डॉक्टर साहब हम ये जानना चाहते हैं कि एक प्रैक्टिसिंग डॉक्टर होने के नाते आपने कभी कुछ ऐसा महसूस किया है, जहां लोग मेडिकल साइंस से ठीक नहीं हुए और आपने उनका इलाज करने के लिए किसी को स्थान पर भेजा था? क्या कभी ऐसा कुछ हुआ था?

डॉ वचानी : हां एक व्यक्ति थे, जिन्हें ब्लड प्रेशर था। मुझे नहीं पता लेकिन आमतौर पर तो ब्लड प्रेशर वाला इंसान मेडिकल साइंस में ठीक हो जाता है, लेकिन मैंने उन्हें स्थान पर भेजा और पांचवे महीने से ही उनकी दवाइयां छूट गई थीं। तो यह बात मैं जानता हूं। एक और केस मुझे याद है। एक डॉक्टर की बेटी थी, उन्हें ब्रेन टीबी हो गया था, जिसको ट्यूबरक्लोसिस मैनिंजाइटिस कहते हैं। मैंने अपनी देखभाल में उन्हें अस्पताल में एडमिट किया था, वो मुझे जानते थे। मैं न्यूरोलॉजिस्ट की मदद से उनकी टीबी का इलाज भी कर रहा था। वो 5 दिन तक ठीक रहीं, लेकिन उसके बाद उनकी हालत बिगड़ने लगी। उनके न्यूरोलॉजिकल सिम्टम खराब हो गए थे और फिर मैंने उम्मीद खो दी। मैं सोच रहा था कि वो नहीं बचेगी। मैंने दो और न्यूरोलॉजिस्ट को बुलाया, फिर भी कुछ नहीं हो रहा था। फिर मैंने उनकी मां से कहा, "यदि आपको विश्वास है तो इसे आजमाने में कोई नुकसान नहीं है। यदि आप चाहें तो स्थान पर आ सकते हैं।" वो स्थान पर आए और वहां उनका उपचार भी किया गया। इसके बाद उस लड़की की हालत सुधर गई।

कभी-कभी बिगड़ी हुई तबीयत तमाम इलाज के दायरे से बाहर हो जाती है, क्योंकि इनकी वजह कुछ अनजान होती है, जिन्हें हम प्रेतात्मा, काला जादू और नकारात्मक ऊर्जा के नाम से जानते हैं।

खुशकिस्मती से डॉ वचानी खुली सोच वाले इंसान हैं और इसीलिए वो उन बातों की गहराई का अंदाजा लगा पाते हैं, जो उन्हें अपने मेडिकल स्कूल में नहीं सिखाया गया।

डॉक्टर वचानी : एक लेडी थी जो 65 से 70 साल की सरदारनी थी। मैंने उनके बेटे के हार्ट अटैक का इलाज किया था। उन्हें मेरी उपचार विधि, सलाह और मार्गदर्शन में गहरा विश्वास था।

उनका बेटा शराबी था और वे उसकी इस आदत के खिलाफ थी। एक दिन अचानक उस परिवार ने मुझे फोन किया कि उनकी मां अच्छी तरह व्यवहार नहीं कर रही है। वो बड़े अजीब ढंग से पेश आ रही थीं और शराब की मांग कर रही थीं। मैंने उन्हें यह सोचकर भर्ती कर लिया कि उन्हें कोई दिमागी समस्या है। तो मैंने उन्हें अपने नर्सिंग होम में एडमिट कर लिया। तीन-चार दिनों तक मैंने सबकुछ किया, लेकिन मुझे नतीजे नहीं मिल रहे थे। उस समय मैंने उनसे कहा, "यदि आप चाहें तो हम स्थान का उपचार आजमा सकते हैं। वो इसके लिए राजी हो गए। मैंने उन्हें गारंटी दी कि वो ठीक हो जाएंगी। वो स्थान पर आए और गुरुजी के कमरे में उनके प्रवेश से पहले मैंने गुरुजी से कहा कि मैं उनसे वादा कर चुका हूं। असल में गुरुजी ने मुझे चिल्लाया और मुझसे कहा, "अगली बार बिना कुछ जांचे-परखे कोई वादा मत करना क्योंकि उस महिला पर एक नहीं बल्कि बहुत-सी प्रेत आत्माओं का साया है।" तो उन्होंने कुछ किया और स्थान के लोग उपचार के लिए रिवाइवल नर्सिंग होम आए थे, क्योंकि मैं तो इसमें नया था और मुझे उपचार के बारे में ज्यादा कुछ नहीं पता था। और फिर हमने दो और दिनों तक देखा और 5 दिनों बाद जब मैं उन्हें देखने उनके घर गया तो मैं डायग्नोसिस नहीं कर पाया और निश्चित तौर पर कुछ भी सामने नहीं आया। वो पूरी तरह ठीक थीं, बिल्कुल पहले की तरह।

चिकित्सा के पेशे में मेरा 100% विश्वास है। इन वर्षों में मैंने महसूस किया है कि 60% से ज्यादातर शारीरिक समस्याएं मानसिक तौर पर होती हैं। स्थान पर आने से पहले मुझे बिल्कुल नहीं पता था कि भूत प्रेत होते हैं। एक मेडिकल छात्र होने के नाते मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह मुमकिन हो सकता है। लेकिन स्थान पर आने के बाद लोगों को देखकर धीरे-धीरे मुझे इस पर यकीन हो गया।

मुझे एक और केस याद है। वो 40-45 साल के एक पंजाबी सज्जन थे। वो हार्ट अटैक के बाद मेरी देखभाल में भर्ती थे और हार्ट अटैक से ठीक हो गए थे। इसके बाद उन्हें बहुत-सी समस्याएं होने लगीं, जिसे समझना बड़ा मुश्किल था। वो 100% ठीक नहीं हो पा रहे थे और सामान्य जिंदगी नहीं जी पा रहे थे। दो-तीन वर्षों के बाद उन्होंने मुझे कॉल करके बताया कि उन्हें सीने में दर्द होता है और तमाम तरह की मुश्किलों के बारे में बताया। तब मैंने उनसे कहा, "क्योंकि 3 साल हो चुके हैं और तुम्हें हर वक्त सीने में दर्द रहता है और आप ठीक से चल भी नहीं पाते। तो एक बार फिर एंजियो करते हैं और फिर हमने उन्हें नानावटी हॉस्पिटल में एडमिट कराया। वो पूरी तरह हिंसक और अनियंत्रित हो गए थे। कार्डियोलॉजिस्ट ने मुझे कॉल करके कहा, "हम एंजियो नहीं कर सकते, क्योंकि वो बहुत हिंसक हो गए हैं और उन्हें नशे की दवा देनी पड़ेगी।"

उन्हें बिना एंजियो किए ही हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर दिया गया। फिर मैं उनके घर जाकर उनसे मिला और मैंने पाया कि यह यकीनन आत्मा से जुड़ी समस्या है ना कि मेडिकल की समस्या। मैंने उनकी पत्नी से कहा, "मैं भले ही एक कार्डियोलॉजिस्ट, एमडी डॉक्टर हूं लेकिन मेरा तो यही मानना है और मेरा यही अनुभव है।" उस समय वो पेशेंट बालकनी में था और मैं उनके पास गया और उनसे बात की। लेकिन जब वो मुझसे बोल रहे थे, तो शब्द और आवाज उनके बिल्कुल नहीं थे। मुझसे कोई और बात कर रहा था। और उस आवाज ने मुझसे कहा, "जब भी मैं इसे मारने आता हूं तो तुम बीच में आ जाते हो।"

जब एक डॉक्टर यह स्वीकार करे कि किसी बीमारी की असली वजह प्रेतात्मा का हमला है, तो इससे मेडिकल साइंस की सीमाएं उजागर हो जाती हैं। इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि किसी असामान्य बीमारी का इलाज भी असामान्य रूप से ही करने की जरूरत होती है।

इस मामले में यह आत्मा उस मरीज को मारना चाहती थी, लेकिन डॉ वचानी पर तो गुरुदेव की कृपा थी, जिसकी वजह से वो आत्मा अपने मंसूबे में कामयाब ना हो सकी।

बेशक, इस सबकी शुरुआत बुड्ढे बाबा से हुई थी।

असल में, बुड्ढे बाबा ने ही अकेले इस अभियान को शुरू किया था।

फिर इस अकेले शख्स के अभियान से कई लोग जुड़ गए।

मैं सोचता हूं कि यह सिलसिला कब तक चलता रहेगा?

उम्मीद है कि आने वाली कई पीढ़ियों तक ये कारवां जारी रहेगा।

ये इलाज हमेशा उन लोगों का विश्वास मज़बूत बनाता है, जिन्होंने इसे देखा और महसूस किया और जिन्होंने ये कहानियां सुनी हैं।

गुरुदेव ने एक संदेश दिया था, जिसे बताना मैं अपना फर्ज समझता हूं। उन्होंने कहा था कि समय के साथ लोग नजफगढ़ स्थित समाधि पर आएंगे, वहां पानी से भरी एक बोतल रखेंगे,

परिक्रमा करेंगे और उस पानी को अपने साथ ले जाएंगे, क्योंकि वो पानी उपचार करने वाले जल में बदल चुका होगा।

मैं यह कहकर अपनी बात को खत्म करना चाहूंगा - "अल्लाह अल्लाह, खैर सल्ला", मतलब ये कि ईश्वर आप सभी को सलामत रखें।

हम भी दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है
हम भी दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है
जिस तरफ भी चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा।